Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुज़्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **08.05.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

अल्लाह तआला ने हमारी प्रगति का यही साधन रखा है कि हमारी मस्जिदें बढ़ती जाएं तथा लोगों के द्वारा सदैव आबाद रहें। जब तक तुम मस्जिदों को आबाद रखोगे, उस समय तक तुम भी आबाद रहोगे और जब तुम मस्जिदों को छोड़ दोगे उस समय ख़ुदा तआला भी तुझें छोड़ देगा। ये उन्नतियां ख़ुदा तआला की कृपा से मिलती हैं और ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल उसके घर की आबादी का हक़ अदा करने से बढ़ता है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले जुज़्अः को मैं ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह तआला अन्हु के हवाले से घटनाओं में क़ादियान की आरज़्भिक घटनाओं का वर्णन किया था कि क़ादियान के आस पास की उस समय क्या स्थिति थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ सैर के समय जी एक आध आदमी साथ होता था और रास्ता भी झाड़ियों के बीच में से होता हुआ छोटा सा रास्ता था और अब क़ादियान किस प्रकार विकसित हो रहा है। और यह विकास सामान्य आबादियों की भांति नहीं है बल्कि अल्लाह तआला ने आपको बता दिया था कि यह विकास होगा। बड़ी बड़ी सड़कों तथा रास्तों के निकट जो आबादियां होती हैं, वे प्रगति तो करती हैं परन्तु क़ादियान तो एक कोने में था, सड़क भी नहीं थी फिर भी विकास की सूचना अल्लाह तआला ने दी और फिर विकास हुआ। और आजकल के क़ादियान को देखने के लिए दूर दूर से लोग आते हैं। अपितु क़ादियान का वह क्षेत्र जो जमाअत के उपयोग में है उसमें तो अब विशाल भवनों तथा सुन्दरता के कारण सरकारी संस्थाओं की ओर से कुछ आयोजनों पर उन्हें प्रयोग में लाने के लिए निवेदन किया जाता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी0 ने इस प्रगति के निशान का कई स्थानों पर अधिक विवरण बयान किया है। आप फ़रमाते हैं- कि देखो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अस्तित्व में कैसा भव्य निशान दिखाया है, यद्यपि तुमने उस ज़माने को नहीं पाया, परन्तु हमने उसे पाया और देखा है। अतः इतने निकट के ज़माने तथा निशानों को अपने मन की आँखों से देखना तुह्हारे लिए कुछ अधिक कठिन नहीं है। अन्य निशानों को छोड़ो, मस्जिद मुबारक ही को देखो। मस्जिद मुबारक में एक स्तम्भ पश्चिम से पूरब की ओर खड़ा है। उसके उत्तर की ओर मस्जिद का जो भाग है, यह उस ज़माने की मस्जिद थी तथा उसमें नमाज़ के समय कभी एक और कभी दो पंक्तियां होती थीं। उस भाग में केवल दो पंक्तियां ही नमाज़ के लिए खड़ी हो सकती थीं और हर एक पंक्ति में लगभग पाँच सात आदमी खड़े हो सकते थे। आप फ़रमाते हैं कि- मुझे याद है कि जब मस्जिद के इस भाग में नमाज़ी बढ़े और अन्तिम अर्थात तीसरे भाग में नमाज़ी खड़े हुए तो हमारे आश्चर्य की कोई सीमा न रही। इस प्रकार जब पन्द्रह्वाँ या सोलह्वाँ नमाज़ी आया तो हम चकित होकर कहने लगे कि अब तो बहुत से लोग नमाज़ में आते हैं। हमें जो आश्चर्य हुआ कि कितनी बड़ी सफलता है, उसका ध्यान करो तथा फिर विचारो कि ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल जब नाज़िल होते हैं तो क्या से क्या कर देते हैं।

फिर इस बदलाओ का वर्णन करते हुए, जो अपनों में भी हुई, आप फ़रमाते हैं कि- मुझे याद है अर्थात जो सगे सम्बंधी थे उनमें भी फिर बाद में बदलाओ आए। पहले विरोधी थे फिर वे जमाअत में शामिल भी हुए। आप फ़रमाते हैं- मुझे याद है कि हमारी ताई साहिबा जो बाद में आकर अहमदी भी हो गईं, मुझे देखकर कहा करती थीं कि ''जेहो जियां काँ ओहो जेहे कोको'' मैं इसके बावजूद कि अपनी वालिदा से इसके विषय में पूछा कि इसका क्या अर्थ है तो उन्होंने फ़रमाया कि इसका यह अर्थ है कि जैसा कौआ होता है वैसे ही उसके बच्चे भी होते हैं। कौअे से अभिप्राय नऊज़ुबिल्लाह तुह्हारे अब्बा हैं और कोको से अभिप्राय 'तुम' हो। परन्तु आप फ़रमाते हैं कि देखो मैं ने फिर वह ज़माना भी देखा कि वही ताई साहिबा जो ये सब कुछ कहा करती थीं यदि कभी उनके यहां जाता तो बड़े आदर से स्वागत करतीं, मेरे लिए गद्दा बिछातीं और सम्मान पूर्वक बिठातीं और आदर के साथ सम्बोधित करतीं। इन सारी बातों को जानकर तुम समझ सकते हो कि ख़ुदा तआला जब दुनिया को बदलना चाहता है तो कि प्रकार बदल देता है। इस प्रकार जैसा कि मैं ने कहा कि ये घटनाएं ईमान में ताज़गी एंव उन्नति पैदा करने की ओर ध्यान दिलाते हैं, ये हमें अल्लाह तआला से निकट करने वाले होने चाहिएं। ये हमें बताने वाले होने चाहिएं कि अल्लाह तआला के समर्थन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ हैं, हमने भी उनसे अंश प्राप्त करना है और क़ादियान के रहने वाले अहमदियों को भी विशेष रूप से इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। हम में से बहुत से इस बात को जानते हैं तथा इस बात का ज़िक्र भी होता रहता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि क़ादियान प्रगति करेगा (पिछले कुछ ख़ुत्बों में मैं ने घटनाएं भी बयान की थीं) तथा इसका फैलाओ ब्यास नदी तक हो जाएगा यह बात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने एक सपने के आधार पर कही थी। तो इस प्रकार हज़रत मुस्लेह मौऊद ने इस भविष्य वाणी को, कि क़ादियान की

आबादी बढ़ते बढ़ते ब्यास नदी तक पहुंच जाएगी, इसको विभिन्न दृष्टि कोण से बयान फ़रमाते हुए जमाअत के लोगों को अपने दायित्वों की ओर भी ध्यान दिलाया है। और ये कर्त्तव्य केवल क़ादियान के रहने वालों ही का नहीं बल्कि जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति को इसे सम्मुख रखना चाहिए। एक तो आपने इस संदर्भ में हमें नमाज़ों की ओर भी ध्यान दिलाया है। ये विचित्र बात लगती है कि आबादी के बढ़ने का नमाज़ों के साथ क्या सम्बंध है? परन्तु यही हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु की बातों में सुन्दरता है कि एक बात के विभिन्न पहलू बयान फ़रमा कर उसके महत्व को और अधिक कर देते हैं।

हाँ, इसकी सम्भावना निश्चित है कि आबादी के बढ़ने के साथ एक समय ऐसा आए कि क़ादियान में एक विशाल मस्जिद बनाई जाए जिसमें तीन चार लाख नमाज़ी, नमाज़ पढ़ सकें। तो देखो अल्लाह तआला का यह बड़ा फ़ज़्ल है कि लोगों की मस्जिदें ख़ाली पड़ी रहती हैं और हम अपनी मस्जिदों को बढ़ाते हैं तो वे और तंग हो जाती हैं यहां तक कि लोगों को नमाज़ पढ़ने के लिए जगह नहीं मिलती।

फिर आपने अपनी वह घटना सुनाई जब आप जुम्अः के लिए तशरीफ़ ले जा रहे थे। कहते हैं- मेरी आयु पन्द्रह सोलह साल की थी। जब घर से निकला तो एक व्यक्ति वापस आ रहा था मस्जिद से, तो उसने कहा कि मस्जिद में तो कोई जगह नहीं है नमाज़ पढ़ने की। इस लिए उसकी यह बात सुनी और मैं भी वापस आ गया। फ़रमाते हैं- कि मैं ने ज़ोहर की नामज़ पढ़ ली। आप फ़रमाते हैं कि- यह मेरी नादानी थी, मुझे सुनिश्चित कर लेना चाहिए था कि मस्जिद भरी हुई है भी कि नहीं। यहाँ वहाँ खड़े होने अथवा बैठने का स्थान है भी या नहीं। तो इस प्रकार आप फ़रमाते हैं- कि यह अल्लाह तआला का एहसान है कि मैं छोटी आयु से ही नमाज़ों का पाबन्द हूँ और मैं ने आजतक एक नमाज़ भी कभी नहीं छोड़ी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कभी मुझ से यह नहीं पूछते थे कि तुमने नमाज़ पढ़ी है कि नहीं। आप फ़रमाते हैं- कि मुझे याद है कि जब मैं गयारह्वें साल में था तो एक मैं ने ज़ुहा अथवा इशराक़ की नमाज़ के समय वज़ू करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कोट पहना और ख़ुदा तआला के समक्ष ख़ूब रोया और मैं ने एहद किया कि भविष्य में नमाज़ कभी नहीं छोड़ूंगा। और ख़ुदा तआला की कृपा है कि इस प्रतिज्ञा एंव निश्चय के बाद मैं ने कभी कोई नमाज़ नहीं छोड़ी। अतः आप फ़रमाते हैं- इसके पश्चात, परन्तु उस दिन सम्भवतः मेरे आलस को अल्लाह तआला दूर करना चाहता था कि जो थोड़ी बहुत सुस्ती है भी, कई बार जमाअत के साथ नमाज़ छूट जाती है, उसको दूर करना चाहता था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे देखकर कहा- जब मैं वापस आ गया और जुम्अः नहीं पढ़ा, कि महमूद इधर आओ। मैं गया तो आपने फ़रमाया- तुम जुम्अः पढ़ने नहीं गए? मैं ने कहा - मैं गया तो था लेकिन पता चला कि मस्जिद भरी हुई है, वहाँ नमाज़ पढ़ने के लिए कोई जगह नहीं। मैं ने कहने को तो यह कह दिया, आप फ़रमाते हैं- दिल में बड़ा भय अनुभव हुआ कि दूसरे की बात पर क्यूँ विश्वास किया। पता नहीं उसने झूठ कहा था या सच कहा था? यदि सच बोला था तो ठीक है परन्तु यदि उसने झूठ बोला है तो क्यूंकि उसकी बात मैं ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सामने बयान कर दी है इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मुझसे नाराज़ होंगे कि तुमने झूठ क्यूँ बोला। अतः आप कहते हैं कि- मैं अपने मन से बड़ा दुःखी हुआ कि पता नहीं आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क्या फ़रमाएं। इतने में नमाज़ पढ़कर मौलवी अब्दुल करीम साहब, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का हाल पूछने के लिए आए। आपको गर्दे की दर्द थी उस समय, इस लिए जुम्अः पर नहीं गए थे। तो निकट में ही इधर उधर मंडला रहा था कि देखो आज क्या बनता है। उनके आते ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनसे पूछा कि क्या आज जुम्अः में लोग अधिक आए थे? और मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए अधिक जगह नहीं रही थी? आप कहते हैं कि- मेरा तो यह बात सुनते ही दिल बैठने लगा कि क्या पता कि उस व्यक्ति ने मुझसे सच कहा था अथवा झूठ कहा था। परन्तु अल्लाह तआला ने मेरा मान रख लिया। मौलवी अब्दुल करीम साहब मरहूम ने यह सुना तो कहा कि हुज़ूर, अल्लाह का बड़ा एहसान था कि मस्जिद लोगों से ख़ूब भरी हुई थी। उसमें बैठने के लिए तनिक सा भी स्थान नहीं था। तब मैं ने समझा कि उस अहमदी ने जो कुछ कहा, सच कहा था। तो अल्लाह तआला ने हमारी प्रगति का यह साधन रखा है कि हमारी मस्जिदें बढ़ती जाएं तथा लोगों से सदैव आबाद रहें। जब तक तुम मस्जिदों को आबाद रखोगे, उस समय तक तुम भी आबाद रहोगे और जब तुम मस्जिदों को छोड़ दोगे उस समय ख़ुदा तआला भी तुम्हें छोड़ देगा।

अतः क़ादियान का विकास, अहमदिया जमाअत की प्रगति एंव विस्तार केवल क्षेत्र की दृष्टि से ही नहीं अपितु इस विस्तार का प्रदर्शन हमारे घरों की आबादी के साथ साथ ख़ुदा तआला के घर की आबादी पर भी है। अतः हर अहमदी, चाहे वह क़ादियान का रहना वाला है जिसने क़ादियान का विकास देखना है या रबवा का रहने वाला है जिसने रबवा की प्रगति देखनी है अथवा किसी अन्य देश का रहने वाला है जिसने जमाअत की प्रगति का भागीदार बनना है और जमाअत का विकास देखना है तो अपनी आबादियों के साथ मस्जिदों को आबाद रखना भी अति आवश्यक है क्यूंकि ये उन्नतियां ख़ुदा तआला की कृपा से मिलती हैं और ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल उसके घर की आबादी का हक़ अदा करने से बढ़ता है। अतः आज जब हम मस्जिदों के निर्माण की बातें करते हैं तो हमें कोशिश करनी चाहिए कि हर जगह मस्जिदें छोटी पड़ती चली जाएँ और अल्लाह तआला के साथ निष्ठा पूर्वक सम्बंध पैदा करने का प्रयास करना चाहिए ताकि अल्लाह तआला हमें कभी न छोड़े और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रत्येक भविष्य वाणी को स्वंय भी बड़ी शान के साथ

पूरा होता हुआ देखें।

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने इस भविष्य वाणी के संदर्भ में, जब यह पेशगोई की गई, क़ादियान की स्थिति का चित्रण किया कि स्थिति क्या थी क़ादियान की। फ़रमाते हैं- मैं उस भविष्य वाणी का वर्णन करता हूँ जो क़ादियान के विकास के विषय में है। फिर फ़रमाया कि- वह यह है कि हज़रत अक़दस को बताया गया कि क़ादियान का गाँव उन्नति करते करते एक बहुत बड़ा शहर हो जाएगा जैसे कि बम्बई और कलकत्ता के शहर हैं। अर्थात नौ दस लाख आबादी तक पहुंच जाएगा और उसकी आबादी उत्तर तथा पूरब में, जैसा कि मैं ने कहा, यह उस समय के अनुमान के अनुसार आप ने बात कही और इसकी आबादी उत्तर तथा पूरब में फैलते हुए ब्यास तक पहुंच जाएगी, जो क़ादियान से नौ मील की दूरी पर बहने वाली एक नदी का नाम है। यह भविष्य वाणी जब प्रकाशित हुई उस समय क़ादियान का हाल यह था कि उसकी आबादी लगभग दो हज़ार थी। कुछ पक्के मकानों के अतिरिक्त शेष सभी घर कच्चे थे। मकानों का किराया इतना कम था कि चार पाँच आने महीना पर मकान किराये पर मिल जाता था मकनों की ज़मीन का मूल्य इतना कम था कि दस बारह रुपऐ में रहने के योग्य मकान बनाने के लिए ज़मीन मिल जाया करती थी । बाज़ार का यह हाल था कि दो तीन रुपऐ का आटा एक समय में नहीं मिल सकता था। क्यूंकि लोग ज़मीनदार वर्ग के थे और स्वंय ही, बजाए इसके कि आटा रखें, गेहूँ रखा करते थे और दाने पीस कर रोटी पकाते थे, चक्कियां थीं। शिक्षा हेतु एक सरकारी स्कूल था जो प्राइमरी तक था। उसका अध्यापक कुछ पैसे लेकर डाक ख़ाने का काम भी कर दिया करता था। डाक सप्ताह में एक बार आती थी। सारे भवन कस्बे की चार दीवारी के अन्दर थे और प्रत्यक्ष में इस भविष्य वाणी के पूरा होने का कोई सामान नहीं ॥। क्यूंकि क़ादियान रेल मार्ग से ग्यारह मील की दूरी पर था और इसकी सड़क बिल्कुल कच्ची और जिन देशों में रेल हो उनमें उसके किनारों पर जो नगर स्थित हों उन्हीं की जन संख्या बढ़ती है या सड़कें हों अथवा रेल हो। कोई उद्योग क़ादियान में न था कि उसके कारण मज़दूरों की आबादी के साथ नगर का विकास हा जाए। कोई सरकारी विभाग क़ादियान में न था कि इसके कारण क़ादियान की उन्नति हो। न ज़िला मुख्यालय था, न तहसील, यहां तक कि पुलिस चौकी भी नहीं थी। क़ादियान में कोई मंडी भी न थी जिसके कारण यहां की जन संख्या प्रगति करती। जिस समय यह पेशगोई की गई उस समय हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अनुयायी भी कुछ सैकड़ों से अधिक न थे कि उनको आदेश देकर यहां ला कर बसा दिया जाता तो नगर की आबादी में वृद्धि हो जाती। अब इस स्थिति को सामने रखते हुए जो भी इस पेशगोई पर विचार करे और आज के क़ादियान को भी देखे जो यद्यपि अभी ब्यास तक तो नहीं फैला परन्तु अल्लाह के फ़ज़्ल से विकास कर रहा है। तो फिर भी आज के क़ादियान को देखकर ही एक बुद्धिमान व्यक्ति इस बात को निशान मानेगा, परन्तु आवश्यक है कि बुद्धि भी हो तथा न्यायोचित दृष्टि भी हो।। अतः यह सपना जो हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने देखा इसका यह अर्थ नहीं कि इससे आगे क़ादियान नहीं बढ़ेगा। सम्भव है कि किसी समय क़ादियान इतना विकसित हो जाए कि ब्यास नदी क़ादियान के भीतर बहने वाला एक नाला बन जाए और क़ादियान की जन संख्या ब्यास नदी से आगे होशियार पुर के ज़िले की ओर निकल जाए।

क़ादियान में अब जहाँ जमाअत के भवनों में वृद्धि हो रही है। दफ़तरों के अतिरिक्त कारकुनों के क्वाटर्स तथा फ़लैट्स भी बन रहे हैं तथा अन्य भवन बन रहे हैं। वहीं क़ादियान के अपने निवासियों की भी स्थिति सुधार कर अल्लाह तआला अच्छा वरदान दे रहा है कि वे अपने घर बड़े तथा फैले हुए बनाएं। इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तान के समृद्ध अहमदी भी अपने भवन तथा घर बना रहे हैं। फिर विश्व में बसने वाले अहमदियों का भी इस ओर ध्यान है। परन्तु मूल बात वही है जिसे हर एक अहमदी को सम्मुख रखना चाहिए कि सारी प्रगति का भेद अथवा विकास का अंश बनने का भेद ख़ुदा तआला के घरों को आबाद करने तथा उसके साथ सम्बंध स्थापित करने से है। जहां किसी ने ख़ुदा तआला को छोड़ा वहीं ख़ुदा तआला भी छोड़ देता है। और अब यह केवल क़ादियान के विकास से सम्बंधित नहीं अपितु जमाअत की संयुक्त प्रगति भी इसके साथ जुड़ी है कि अपनी मस्जिदों को छोटा करते चले जाएं तथा ख़ुदा तआला के समर्थन एंव सहायता की आशा रखें।

हमें सदैव याद रखना चाहिए कि केवल क़ादियान का विकास ही नहीं बल्कि जमाअत के हर प्रकार का विकास का वादा है। जब एक निशान हम पूरा होता देखते हैं तो दूसरे निशान के पूरा होने के बारे में भी विश्वास बढ़ता है। अतः अपने ईमानों को व्यापक रखें, ख़ुदा तआला से सम्बंध जोड़े रखें तथा अपने ईमानों की व्यापकता के लिए दुआ भी करते रहें। सूरज निकलेगा तथा अवश्य निकलेगा इन्शाअल्लाह तआला और ख़ुदा तआला की सहायता आएगी तथा अवश्य आएगी।

अब कुछ विभिन्न हवाले भी पेश करता हूँ। वक़्फ़े नौ की क्लास में एक बच्ची ने सवाल किया कि क़बरों पर फूलों की चादर चढ़ाने या फूल रखने में क्या बुराई है, यह उचित है कि नहीं। इस पर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक बार फ़रमाया- ऐसी घटना जब आप के संज्ञान में आई कि मुझे बताया गया है कि कुछ लोग हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मज़ार से बरकत के लिए मिट्टी ले जाते हैं। कुछ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मज़ार पर फूल चढ़ा जाते हैं। ये सब व्यर्थ के काम हैं इनसे कोई लाभ नहीं होता तथा ईमान नष्ट हो जाता है। भला क़बर पर फूल चढ़ाने से मुर्दे को क्या लाभ हो सकता है। हाँ, दुआएं लाभ प्रदान करती हैं उनको करना चाहिए। संसार में हम देखते हैं कि लोग दफ़न होते हैं तो मिट्टी बन जाते हैं, यह क़ानून है, प्रकृति का नियम है और जब ऐसी हालत हो

तो ज़ाहिरी फूलों की सुगन्धों ने किसी को क्या देना है? आत्माओं को कर्मों के फल के लिए भी, वे तो अपनी रूहें जो हैं, कर्मों के फल के लिए ख़ुदा तआला के समक्ष हाज़िर हो गईं और होती हैं। और उस आत्मा को लाभ पहुंचाने के लिए अब दुआ करनी चाहिए ताकि अल्लाह तआला उनके साथ रहमत का व्यवहार करे। किसी प्रकार का शिर्क वाला कर्म क़बरों पर जाकर नहीं करना चाहिए और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अहमदी नहीं करते। परन्तु कई बार इस प्रकार की बातें आती हैं कि यहाँ भी कुछ लोग फूल आदि चढ़ाते हैं और ये व्यर्थ के कार्य हैं, हमारी क़बरों पर ऐसा नहीं होना चाहिए।

एक अन्य घटना जिसका हज़रत मुस्लेह मौऊद ने वर्णन किया, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब इस्लामी उसूल की फ़लास्फ़ी के लिखे जाने और पढ़े जाने के विषय में है वह भी विचित्र घटना है और इसके द्वारा कई टेढ़े लोगों का पता चलता है। यह नहीं कि बाद में टेढ़े होते हैं, बल्कि आरज़्म से टेढ़े होते हैं तो अल्लाह ताअला फिर उनके परिणाम भी ठीक नहीं करता। आप फ़रमाते हैं कि- 1897 में जब लाहौर में जलसा-ए-आज़म की आधार शिला रखी गई और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी इसके लिए निबन्ध लिखने को कहा गया तो ज़्वाजा साहब ही ये पैग़ाम लेकर आए थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को उन दिनों दस्तों का रोग था। इस रोग के बावजूद आपने निबन्ध लिखना आरज़्म किया और अल्लाह तआला की कृपा से पूरा किया। जब यह निबन्ध हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ज़्वाजा साहब को दिया तो उन्होंने इस पर बड़ी निराशा प्रकट की और अपना विचार व्यक्त किया कि यह निबन्ध प्रशंसा योग्य नहीं है और बिना प्रशंसा के हंसी का कारण बनेगा। परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला ने बताया था कि निबन्ध बाला रहा। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पहले ही इस इल्हाम के विषय में इश्तिहार लिख कर लाहौर में प्रकाशित करना उचित समझा और इश्तिहार लिख कर ज़्वाजा साहब को दिया। उसे पूरे लाहौर में प्रकाशित एंव प्रसारित किया जाए और ज़्वाजा साहब को बड़ी सांतवना दिलाई परन्तु ज़्वाजा साहब क्यूंकि निर्णय कर बैठे थे कि निबन्ध नऊज़ु बिल्लाह व्यर्थ एंव असफल है उन्होंने न स्वंय इश्तिहार प्रकाशित किया और न अन्य लोगों को प्रसारित करने दिया। अन्ततः वह दिन आया जिस दिन उस निबन्ध को सुनाया जाना था। निबन्ध जब सुनाया जाना आरज़्म हुआ तो अभी कुछ मिन्ट ही हुए थे, हम सब जानते हैं कि जिस प्रकार इतिहास में वर्णन मिलता है लोग बुत बन गए। और ऐसा हुआ कि मानो उन पर जादू किया हुआ है। विरोधी एंव समर्थक सभी ने एकमत होकर कहा कि हज़रत मसीह मौऊद का लैक्चर सबसे बाला रहा। और ख़ुदा तआला की बताई हुई बात पूरी हुई। परन्तु इस भव्य पेशगोई को ज़्वाजा साहब की के ईमान की दुर्बलता ने छुपा दिया।

फिर इस ओर ध्यान दिलाते हुए कि अहमदियों में किस प्रकार का दीनी स्वाभिमान होना चाहिए, हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक घटना बयान फ़रमाई- जहाँ गालियाँ दी जाती हैं वहाँ जाए ही क्यूँ। उनका वहाँ जाना ही बताता है कि वे वास्तविक स्वाभिमान के स्तर पर नहीं हैं। यदि तुम्हारे अन्दर वास्तविक स्वाभिमान हो तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम या अपने इमाम और अन्य नेक बन्दों के विषय में गालियाँ सुनने के लिए जाते ही क्यूँ हो? तुम्हारा वहाँ जाना बताता है कि तुम्हारे अन्दर स्वाभिमान नहीं अथवा तुच्छ प्रकार का स्वाभिमान है। मुझे याद है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में आर्यों ने लाहौर में एक जलसा किया और वहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निबन्ध पढ़ा गया जिसमें सारी बातें मुहब्बत और प्यार की थीं। उसके पश्चात एक आर्य ने निबन्ध पढ़ा जिसमें बड़ी गालियाँ रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दी गई थीं। और वे सारे गन्दे आरोप लगाए गए जो ईसाई और आर्य लगाते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब यह सुना कि जलसे में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियाँ दी गई हैं तो आप बड़े नाराज़ हुए और ख़लीफ़ः अव्वल भी बड़े नाराज़ हुए कि क्यूँ न आप लोग विरोध जताते हुए वहाँ से उठ कर आ गए। किसी प्रकार भी आपको यह सहन नहीं करना चाहिए था, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बार बार अपनी नाराज़गी प्रकट कर रहे थे। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने थोड़ी देर पश्चात क्षमा कर दिया।

ख़ुत्बः जुज़्अः के अन्त में हुज़ूर अनवर ने मोहतरम हाजी मंज़ूर अहमद साहब दरवेश क़ादियान का शुभ वर्णन फ़रमाया। जिनकी मृत्यु 85 वर्ष की आयु में एक मई 2015 को क़ादियान में हुई थी। मरहूम के सद्गुणों तथा विशेष सेवाओं का वर्णन फ़रमाया और दुआ फ़रमाई कि अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए तथा उनकी संतानों को भी उनके पद-चिन्हों पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 08.05.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

BOOK-POST (PRINTED MATTER)
TO,.....
.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*